गीताली

बाल कविता संग्रह

प्रीतम कुमार साहू "कुशप्रीत"

आलोक प्रकाशन

गीताली

(बाल कविता संग्रह)

प्रीतम कुमार साहू "कुशप्रीत"

C - 2023 - प्रीतम कुमार साहू "कुशप्रीत"

आलोक प्रकाशन

अपनों से

बच्चे भगवान के रूप होते है तभी तो कहा जाता है बाल देवो भव: ।इस धरती में यदि हम भगवान का दर्शन करना चाहे तो वह हम बच्चों को देख कर कर सकते है। छल, कपट से कोसो दूर बच्चे मन के सच्चे होते हैं। बाल कविता में बच्चों की कल्पना की उड़ान समाहित होता है। बच्चों की कल्पना को समझ पाना सहज नही होता।

बच्चे अपने दुनिया में उत्साह उमंग लिए मस्त रहते है। बचपन की मधुर यादे हर किसी को याद रहती हैं। पल भर में हँसना पल भर में रोना कभी लड़ना कभी झगड़ना फिर आपस में मिलकर रहना । बच्चों की ये आदतें हमें सरल,सहज स्वभाव से मिल-जुलकर रहने की सीख देती है।

ये मेरा सौभाग्य है कि मै बच्चों का प्रारंभिक शिक्षादाता हूं। बच्चों के बीच अपने आपको पाकर सहज हर्ष का अनुभव करता हूं। मेरे लिखे हुए कविता, कहानियाँ एवं चित्रकला का सम्पूर्ण अंश बच्चों पर ही आधारित होती है।

गीताली में मैने बच्चों की कल्पनाओं को सहेजने का प्रयास किया है। निश्चित ही यह पुस्तक बच्चों में उत्साह और उमंग का संचार करने के साथ-साथ प्रेरणा भी प्रदान करेगी "गीताली" मेरी भतीजी गीताली एवं सभी नन्हे मुन्हे प्यारे बच्चों को समर्पित है।

आपका अपना

प्रीतम कुमार साहू "कुशप्रीत"

लिमतरा,धमतरी,(छ.ग)

अनुक्रमनिका..

1. बरखा रानी……
2. पानी बरसे……
3. स्कूल जाऊंगा……
4. चंदा मामा……
5. लड़ना होगा……
6. सीखों ……
7. कर्म से किस्मत ……
8. स्कूल ……
9. मेरे पिता……
10. रसीले आम……
11. नमन……
12. परिंदे……
13. वक्त……
14. बगियाँ ……
15. शारद ऋतु ……
16. हाथी आया……
17. घड़ी……
18. चल रहा हूँ ……
19. माँ बाप……
20. फल सब्जी……
21. खेल कूद ……
22. माँ को नमन……
23. दोस्ती……
24. हिंदी भाषा……
25. सिखाते है……
26. शिक्षक……

27. नारियल……
28. नागदेव……
29. पिंक ब्रश……
30. कालू बंदर……
31. गीताली ……
32. कालू भालू……
33. बिल्ली मौसी……
34. चूहा और बिल्ली……
35. रानी तितली……
36. स्कूल चले हम……
37. बाघ……
38. बरखा रानी……
39. डॉक्टर……
40. सड़क ……
41. सड़क संकेत……
42. जीराफ……
43. मेरा घर……
44. चिड़िया……
45. ग्रीष्म ऋतु ……
46. चींटी ……
47. नदियां ……
48. दर्पण……
49. बचपन की यादे……
50. वृक्ष……
51. मंजिल ……
52. बचपन ……

‘’ बरखा रानी ”

रिमझिम,रिमझिम करता आया,

बरखा रानी साथ है आया !!

मिट्टी की सौंधी खुशबू से,

घर आंगन महक आया !!

बादल गरजे,गड़,गड़-गड़

बिजली चमके कड-कड़ कड़ !!

पानी बिन जब धरती तरसे,

घुमड़,घुमड़ तब बादल बरसे !!

---+++----

" पानी बरसे "

धरती माँ की प्यास बुझाने !

सब जीवों में आस जगाने !!

तेज हवा का झोंका आया !

संग में अपने बरखा लाया !!

बादल गरजे गड़-गड़-गड़ !

बिजली चमके कड़-कड़-कड़ !!

मेंढक करता टर्र-टर्र-टर्र !

पानी बरसे झर-झर-झर !!

---+++----

“मै भी स्कूल जाऊँगा”

पापा अब मैं बढ़ा हो गया

अब मैं भी स्कूल जाऊंगा..!!

कॉपी,कलम,किताब पकड़कर

समय पर स्कूल जाऊंगा...!!

अनुशासन का पाठ पढ़ूंगा

गुरुओं का मैं आदर करूंगा.!!

नहीं कभी आपस में लड़ूंगा

मिल जुल कर सबसे रहूंगा..!!

क, ख, ग, घ, और ड़ अक्षर

पढ़ लिख मैं बनूंगा साक्षर..!!

.....+++.....

"चंदा मामा आओ ना"

चंदा मामा आओ ना !

खीर पूड़ी लाओ ना..!!

इतने दूर क्यों रहते हो !

पास मेरे आ जाओ ना..!!

मिलकर खेल खेलेंगे !

साथ में झूला झूलेंगे..!!

स्कूल पढ़ने जाएंगे !

गीत खुशी के गाएंगे..!!

हमको भी ले जाओ ना !

तारों की सैर कराओ ना !!

कैसे दिखती धरती मेरी !

हमको भी दिखलाओ ना !!

----+++----

"अंतिम साँस तक लड़ना होगा."

जीवन पथ पर लड़ना होगा

कदम मिलाकर चलना होगा..!!

राहे अपनी खुद गढ़ना होगा

लक्ष्य मार्ग पर बढ़ना होगा..!!

रगों में साहस भरना होगा

कर्म से किस्मत लिखना होगा..!!

मुश्किलों से खुद लड़ना होगा

लडते-लड़ते बढ़ना होगा..!!

सफलता नहीं मिलती तब तक

अंतिम साँस तक लड़ना होगा..!!

----+++---

सीखो

खुद की लड़ाई खुद लड़ना सीखो
खा कर ठोकर सम्हलना सीखो..!!

खुशी और गम आएंगे जिंदगी में
स्वीकार दोनों को करना सीखो..!!1

नदियों सा हर दम बहना सिखों
सूरज की तरह निकलना सीखों..!!

थककर ना बैठ मंजिल के मुसाफिर
मंजिल की राह पर चलना सीखों..!!

मुश्किलों से डटकर लड़ना सीखों
पाने के लिए कुछ करना सीखों..!!

बिन मेहनत के नहीं मिलता कुछ
मेहनत पर भरोसा करना सीखों..!!

----+++---

"कर्म से किस्मत लिखें हम"

जंग अपनी थी जंग लड़े हम

लड़ के खुद सम्हल गए हम..!!

दर्द था दिल में जताया नहीं

अश्क आँखों से बहाया नहीं..!!

राहें अपनी खुद गड़कर हम

बाधाओं से खुद लड़कर हम..!!

लक्ष्य मार्ग पर बढ़कर हम

सफल हुए मेहनत कर हम..!!

किस्मत पर भरोसा किए नहीं

कर्म से किस्मत लिखें हम..!!

---+++---

“ स्कूल पढ़ने जाऊंगा ”

जब मैं भी बड़ा हो जाऊंगा,

रोज स्कूल पढ़ने जाऊंगा..!!

कॉपी,कलम,किताब पकड़कर

समय पर स्कूल जाऊंगा...!!

अनुशासन का पाठ पढ़ूंगा

गुरूओ का मैं आदर करूंगा.!!

नहीं कभी आपस में लड़ूंगा

मिल जुल कर सबसे रहूंगा..!!

क, ख, ग, घ, और ड़ अक्षर

पढ़ लिख मैं बनूंगा साक्षर..!!

.....+++.....

" मेरे पिता "

मेरे लिए आन बान, शान है पिता

धरती का साक्षात भगवान है पिता..!!

सब रिश्तों का एक मिसाल है पिता

अपनों के लिए बनते ढाल है पिता..!!

छाले हो पांव में नहीं दिखाते है पिता

कंधे पर बैठाकर भी घुमाते है पिता..!!

पैरो पर खड़ा होना सिखाते है पिता

सही, गलत का राह दिखाते है पिता..!!

जिम्मेदारियों का बोझ उठाते है पिता

गम सहकर भी मुसकुराते है पिता..!!

डगमगाते कश्ती का खेवनहार है पिता

बच्चों के लिए मानो पूरा संसार है पिता..!!!

------++++-------

"रसीले आम"

पीले पीले रसीले आम

सबके मन को भाता आम..!!

बिन खाए कोई रह न पाए

सब का जी ललचाता आम..!!

चौसा, दशहरी,लंगड़ा आम

तरह तरह के इनके नाम..!!

कुश,परी,गीताली बिटिया

सब मिले चूसे मीठे आम..!!

कच्चा आम पक्का आम

नहीं लिखा है इसमें नाम..!!

जो खायेगा वो गायेगा

फलों का राजा कहलाता आम..!!

------+++-----

" नमन "

आओ मिलकर उन्हें करें नमन !

जिनके लिए सब कुछ है वतन..!!

देश की रक्षा के लिए जिन्होंने.!

निछावर कर दी तन और मन...!!

घर से दूर वतन के लिए लड़ते.!

मुश्किलों से लड़कर आगे बढ़ते..!!

देकर दुश्मनों को जंग में मात.!

भारत माँ की हिफाजत करते..!!

सरहद में दुश्मन से टक्कर लेते.!

तिरंगे को कभी झुकने न देते..!!

दुश्मनों की गोली सीने में खाकर.!

अपने वतन को महफूज रखते.है.!!

---+++----

" पिंजरे के परिंदें "

आकाश में उड़ते परिंदे को तुम

किस गुनाह की सजा देते हो..!

अपने खुशियों के खातिर तुम

पिंजरे में कैद कर लेते हो..!!

अपनों से उन्हें तुम करके दूर

पिंजरे में कैद क्यों करते हो..!

उनका भी अपना एक जीवन है

उन्हें जीने क्यों नहीं देते हो..!!

उड़ने की उन्हें भी आजादी दो

हक उनका तुम क्यों छीनते हो..!!

बंद पिंजरे में तड़पते परिंदे

पिंजरे में कैद क्यों करते हो..!!

----+++----

" वक़्त की गाड़ी "

वक़्त की गाड़ी है वक़्त के साथ चलेगा !

उगता हुआ सूरज भी शाम को ढलेगा !!

ज़ख्म है जिस्म में तो मल हम भी मिलेगा !

आज है ख़ुशी तो कल गम भी मिलेगा !!

बागों में कलिया है तो फूल भी खिलेगा !

कभी महकेगा चमन,कभी कांटे भी चुभेगा !!

कभी जीत मिलेगा तो कभी हार मिलेगा !

कभी पतझड़ , तो कभी बहार मिलेगा !!

कर रहे हो मेहनत तो फल भी मिलेगा !

दुनिया में हर समस्या का हल भी मिलेगा !!

थक कर ना बैठ ऐ मंजिल के मुसाफिर !

आज नहीं तो कल मंजिल भी मिलेगा !!

---+++---

“ बगिया “

प्रकृति की सौंदर्य बढ़ाती

चहुं ओर खुशबू फैलाती

लोगों में उत्साह जगाती

जीवन जीना हमें सिखाती

मनमोहक प्यारी बगिया

तरह-तरह के फूल खिले है

भँवरा भी मंडराते मिलें है

बच्चे कलिया,फूल तोड़ते

आपस में मिल जुल खेलते

मनमोहक प्यारी बगिया

सुख,दुख में साथ निभाते

मन हमारा हर्षित करते

उछल कूद,बगिया में करते

तन मन को स्वस्थ्य रखते

मनमोहक प्यारी बगिया

------+++----

'' शरद ऋतु ''

बीत गई है बरसा ऋतु,

शरद ऋतु अब आई ..!

रेनकोट और छतरी की,

हो गई अब तो बिदाई..!

स्वेटर,कंबल,मफलर,टोपी

इन सबकी बारी आई..!!

कोहरा और धुंध बरसते

शरद् ऋतु के मौसम में

गरम वस्तुएं गरम कपड़े

खूब भाते इस मौसम में

सुबह सवेरे तकते रहते

कब आयेगी धूप सुहानी

----+++----

“ हाथी आया ”

कुश ,प्रकाश,ओरांश आओ,

नाचों ,गाओ,शोर मचाओ..!

देखो देखो हाथी आया,

संग में अपने साथी लाया..!!

सूपा जैसे उनके कान

देखो-देखो उसकी शान..!!

मोटे- मोटे उनके पैर

करते हैं वो हर दम सैर..!!

छोटी पूछ, लंबी सुंड

करते विचरन अपने झुंड..!!

गन्ना पत्ती जब मिल जाता

खूब खाता,खूब पचाता..!!

------+++-----

“ घड़ी ”

टीक-टीक-टीक-टीक करती हूँ,

दिन रात चलती रहती हूँ ..!!

ना मैं थकती,ना मैं रुकती ,

अपने राह पर चलती रहती ,

नाम है मेरा घड़ी....!!

संग मेरे जो साथ चलता ,

जीवन पथ पर आगे बढ़ता ,

अपनी धून पर मैं चलती हूँ ,

नहीं किसी की मैं सुनती हूँ,

नाम हैं मेरा घड़ी.....!!

-------+++-----

चल रहा हूँ.....!!

चल रहा हूँ, जल रहा हूँ

सूरज सा निकल रहा हूँ..!!

जीत का मैं लक्ष्य लेकर,

सच का मैं पक्ष लेकर,

मेहनत दिन रात कर,

राह् अपनी खुद गढ़कर,..!!

जीत का. जूनून लिए

मन में विश्वास लिए

चल रहा हूँ...

---+++-----

" माँ-बाप "

माँ-बाप मेरे घर के, बरगद स है ।

फल-फूल ना सही, छांव स है ।।

जन्म दिया जिसने,भगवान मेरे है।

संतान हूँ उसका, माँ बाप मेरे है।।

कंधे पर बैठ कर, घूमे है जहान ।

माँ-बाप मेरे लिए,जग में है महान।।

उंगली पकड़ के चले है हम ।

ममता के आंचल में पले है हम।।

जहां पूजते हैं माँ-बाप,वो मेरा वतन है ।

माँ-बाप मेरे लिए, अनमोल रतन हैं ।।

-----++++----

“फल और सब्जी ”

गाजर लाल टमाटर लाल,

खाते इनको बाल गोपाल..!

गाजर,कद्दु, आम, पपीता,

विटामिन ए इसमें रहता..!!

पत्ता गोभी, प्याज, सलाद,

विटामिन बी होते आबाद..!!

नीबू,संतरा , मौसमी, अंगुर,

विटामिन सी होते भरपूर..!!

आसमां में जब धूप खिलता,

विटामिन डी हमें मिलता..!!

----+++--

-“खेल-कूद”

घर के अंदर ,बाहर खेल

गॉव,गली, शहर में खेल

एकल और समुह के खेल

तरह तरह के अपने खेल

खेल-कूद में मस्त है रहना,

स्वस्थ सदा तन -मन रखना

हार-जीत से कभी ना डरना,

कोशिश अंत तक है करना,

खेल हमें हर दम सिखाता

अनुशासन का पाठ पढ़ाता

कभी हंसाता,कभी रुलाता,

संघर्ष का मार्ग हमें दिखाता,

---+++---

" मां को नमन "

जन्म दिया हमें जिस माँ ने,

उस माँ की हम कदर करें..!!

कर ना सके कुछ माँ लिए तो,

कम से कम हम नमन करें..!!

अपना निवाला हमें खिलाया,

रात रात जग हमें सुलाया..!!

सही गलत का राह दिखाया,

उँगली पकड़ चलना सिखाया..!!

----+++---

“ दोस्ती ”

जात पात न देखे दोस्ती,

ऊंच नीच ना देखे दोस्ती !!

सब रिश्तों से प्यारा रिश्ता,

दोस्ती का हमारा रिश्ता !!

जब मैं हँसता,दोस्त भी हँसता,

जब मैं रोता,दोस्त भी रोता !!

सुख दुख में हम साथ ही रहते,

वादा खिलाफी कभी न करते !!

दोस्ती का हम पाठ है पढ़ते,

जीवन पथ पर आगे बढ़ते !!

नहीं कभी आपस में लड़ते ,

दोस्ती की हम मिसाल गढ़ते,!!

-----++++------

" हिंदी भाषा "

सरल,सहज और मीठे भाषा,

बहु प्रचलित और श्रेष्ठ भाषा..!

हम सब का है प्रिय भाषा,

हिन्दी हमारी राष्ट्र भाषा...!!!

साहित्य क श्रृंगार है हिंदी,

सूर,मीरा की भाषा हिन्दी..!!

मैत्री की भाषा हैं हिन्दी,

राष्ट्र का प्रतिक हैं हिन्दी

पढ़ते हिन्दी,लिखते हिन्दी,

सुनते और समझते हिन्दी..!!

हिंदी भाषा हमारी शान,

करते हम इस पर अभिमान..!!

----+++++----

"शिक्षक हमें सिखाते है"

जल्दी सोना-जल्दी जगना

समय के साथ हर दम चलना

सिखने को आतुर रहना,

शिक्षक हमें सिखाते है..!!

संयम और विश्वास रखना,

जीत के लिए परिश्रम करना,

कोशिश अंत तक करते रहना

शिक्षक हमें सिखाते है..!!

सच्चाई की राह में चलना,

आपस में मिल जुल कर रहना,

लक्ष्य मार्ग पर आगे बढ़ना,

शिक्षक हमें सिखाते है..!!

----+++---

“ शिक्षक ”

शिक्षा और संस्कार के दाता,

बच्चों का है भाग्य विधाता..!!

अज्ञानता को दूर भगाकर,

ज्ञान का वह प्रकाश फैलाता...!!

पढ़ना लिखना हमें सिखाता,

अनुशासन का पाठ पढ़ाता...!!

सही गलत का ज्ञान कराकर,

योग्य नागरिक हमें बनाता...!!

बड़ो का आदर करना सिखाता,

गलती हमारी हमें बताता....!!

शिक्षा की अलख जगाकर,

लोगों को जागरूक बनाता..!!

-----+++------

“नारियल”

उंचे लंबे पेड़ों पर

लगते कितने सुंदर फल..!

सब फलों से श्रेष्ठ हैं फल

नाम हैं उनका नारियल फल..!!

मिठे फल और मिठे जल

नहीं हैं इनसा दूजा फल..!!

नरम अंदर है बाहर सख्त

फल आने में लगते वक्त..!!

पूजा पाठ में काम आता

प्रभू चरण में स्थान पाता..!!

तन मन उनका स्वस्थ रहता

जो नारियल का पानी पिता..!!

--++--

” नाग देव”

वन उपवन और बाँबी में रहते,

शिव जी गले में धारण करते !

नाग पंचमी में पूजन करते ,

नाग देव हम उनको कहते !!

दावत जब मेढक का करता,

पेट भरा भरा सा दिखता.!

दूध का जब सेवन करता,

नाग खुशी में मस्त रहता..!!

पहले नाग कभी ना डसता,

अपने राह पर नाग है चलता !

छेड़े जब कोई नाग को पहले,

तब लोगों को नाग हैं डसता !!

----+++----

“ पिंक ब्रश ”

पिंक कलर का मेरा ब्रश,

हर दिन करता हूँ मैं ब्रश..!!!

दिखते पिले जिनके दांत,

साफ नहीं है उनके दांत..!!!

दाँतों की जो करें सफाई,

इसमें हैं दाँतो की भलाई..!!!

दिन में दो बार ब्रश जो करता,

किटाणू उनसे दूर ही रहता..!!

ब्रश करना, करें जो बन्द,

मुख से उनके आये दुर्गन्ध..!!

सौ बातों की एक ही बात,

स्वच्छ रखिये अपने दांत...!!

-----+++----

" कालू बंदर "

वन उपवन से आया बंदर,

गांव, गली और शहर के अंदर!

उछल कूद है करता रहता,

नाम है उसका कालू बंदर..!!

तन है काला मन है साफ,

जय श्री राम का करता जाप !

नहीं किसी से पंगा लेता,

दुश्मन को भी करता माफ..!!

दिन भर घुमता रहता बंदर,

नहीं किसी का उनको डर.!

शाम हुई तो घर के अंदर,

जंगल ही हैं उनका घर !!

“ गीताली ”

नाम गीताली गीतों वाली,

खुशियों की वो प्याली है !

जब से आई घर आँगन में,

चारों तरफ खुशहाली है..!!

सोकर उठती, उठ कर सोती,

मंद-मंद वो है मुस्काती !

भूख लगी तो रोती-गाती,

मम्मी को है पास बुलाती...!!

कभी चलती,कभी दौड़ती,

हमदम उछल-कूद है करती..!!

हुई बड़ी जब गीताली बेटी,

खाती खूब चपाती रोटी..!!

----+++----

“ कालू भालू ”

एक मदारी कालू आया,

संग में अपने भालू लाया!

देख मदारी संग में भालू,

कुश,परी,प्रकाश आया!!

पहने जूता,चश्मा कालू,

नचा रहा थे संग में भालू !

लगी भूख जब भालू बोले,

दे दे कोई पराठा आलू !!

डमरू बाजे डम-डम-डम,

भालू नाचे छम-छम-छम !

उनके धून में खो गए हम,

कालू बोले खेल खतम !!

---+++---

“ बिल्ली मौसी ”

बिल्ली मौसी घूमने को जब,

घर से बाहर आई !

देख मिठाई जी ललचायी

खाई रस मलाई !!

बिल्ली को जब लगी प्यास,

चलकर आयी घर के पास !!

देख दूध से भरा गिलास,

बढ़ गया, दूध पीने की आस !!

पीकर दूध से भरा गिलास,

अपनी प्यास बुझाई !

कहने लगी बिल्ली मौसी,

अब जान में जान आई !!

----+++---

" चूहा और बिल्ली "

देख चूहे को बिल्ली मौसी,

चुपके से पास आई !

दावत करने चूहे का,

वो खूब दौड़ लगाई !!

पकड़ ना पाई बिल्ली मौसी

रोई और पछताई !

बिल में घुस कर चूहे ने,

जब अपनी जान बचाई !!

----+++---

“ रानी तितली ”

हम बच्चों की प्यारी तितली,

लगती सुंदर रानी तितली !!

लेकर रस फूलों की तितली

गीत खुशी की गाती है !!

चुन-चुन रस फूलों का लेती,

मन है हर्षित और उमंग !

बागों की सौंदर्य बढ़ाती,

सुंदर,कोमल उसके अंग !!

सजधज कर आती तितली

सुंदर पंख फैलाती तितली !

बैठ फूलों पर रानी तितली

मंद मंद मुस्काती तितली..!!

“ स्कूल चले हम ”

जा रहे है पढने को हम,

लेकर कापी पुस्तक पेन !

घर से स्कूल जाने को हम,

पकड़ लिए है स्कूल वेन !!

जब पहुंचे स्कूल बन-ठन,

बज रही घंटी टन-टन !

सुन आवाज घंटी की हम,

प्रार्थना में खड़े हो गए हम !!

जन-गण-मन का गायन कर,

सुविचार का वाचन कर !

पीछे हाथ बांध कर हम,

कक्ष में प्रवेश, कर गए हम

----+++----

“राष्ट्रीय पशु बाघ”

(29जुलाई अंतरराष्ट्रीय बाघ दिवस)

जंगल का राजा हैं बाघ !

सबसे अलग है उनका धाक !

दुश्मन से वह लोहा लेता,

नहीं दिखाता पीठ है भाग !!

बैठ दुबके से लगाता घात

शिकार को अपना देता मात !!

भूख लगी तो सब को खाता,

नहीं देखता जात- पात !!

साहस का परिचय कराता !

आलस कभी नहीं वह करता !

झुंड से अलग पहचान बनाता !

राष्ट्रीय पशु वह कहलाता !!

---+++----

“ डॉक्टर ”

(1जुलाई डॉक्टर डे)

तन मन को स्वस्थ्य बनाता!

बीमारी को दूर भगाता!!

धरती का है भाग्य विधाता!

डॉक्टर उसका नाम कहलाता!!

जल्दी सोना,जल्दी जगना !

स्वास्थ्य है हम सब का गहना !!

सुबह-शाम पैदल है चलना !

डॉक्टर का सुबको है कहना !!

फल फूल से जोड़ो नाता !

जंग फूड से तोड़ो नाता !!

नियमित जो टहलने जाता !

स्वस्थ्य निरोग तन मन पाता !!

------+++----

" सड़क"

सिधे,लम्बे,टेढ़े,मेढ़े दिखती हूँ मैं

गाँव,गली शहरों में, रहती हूँ मैं !!

सब लोगों की भार को, सहती हूँ मैं !

कही कच्ची,कही पक्की रहती हूँ मैं !!

कैसे चलना है सड़कों पर बताती हूँ मैं !

संकेतों का पालन करना सिखाती हूँ मैं !!

लोगों को मंजिल तक पहुंचाती हूँ मैं !!

सावधानी से चलने का गीत गाती हूँ मैं !

----+++----

“ सड़क संकेत ”

लाल बत्ती रुकने को, कहती हैं हमें !

संयम का पाठ पढ़ाती हैं हमें !!

हरा बत्ती जाने को कहती है हमें !

बायां तरफ चलना सिखाती है हमें !!

पिली बत्ती तैयार कराती हैं हमें !

सड़क दुर्घटना से बचाती हैं हमें !!

---+++---

“ जीराफ ”

जंगल में आया एक मेहमान

उसे देख सब हुए हैरान।

ऊँची गर्दन, लम्बी टाँगे,

देख उसे सब जानवर भागे ।।

सब लोगों का कर सम्मान।

बन गया जंगल का वह शान।।

करता सब को वह है माफ।

नाम था उनका जि से जिराफ,!!

---+++---

" मेरा घर "

शहर से दूर गांव में ,बरगद की छांव में ,

घास से बनी हुई ,मिट्टी में सनी हुई ,

मेरा एक घर है...!!

पड़ोसी मेरे अच्छे है ,दिल के वे सच्चे है ,

माँ बाप मेरे रहते है ,ना किसी क डर है,

मेरा एक घर है...!!

पक्षी की चहक है,तुलसी की महक है,

सूरज की पहली किरण आते है मेरे आँगन में..!!

मेरा एक घर है...!!

----+++---

“ चिड़िया ”

आसमान में उड़ती चिड़िया ।

लगती सुन्दर प्यारी चिड़िया ।।

पेड़ों की डाली में चिड़िया ।

अपना घर बनाती चिड़िया ।।

घर आंगन में आकर चिड़िया ।

चू-चू गीत सुनाती चिड़िया ।।

कुश बेटा जब दाना देता ।

दाना चूग उड़ जाती चिड़िया ।।

दिनभर मेहनत करती चिड़िया ।

ना थकती,ना रुकती चिड़िया ।।

देख आसमा सूरज ढलता ।

घर को लौट जाती चिड़िया ।।

----+++-----

“ ग्रीष्म ऋतु ”

ग्रीष्म ऋतु जब आती है,

सबकों खुब तपाती है !

पेड़ों कि छाया ने ही,

धूप से हमें बचाती है !!

बून्द-बून्द पानी के लिए ।

पंक्षी तरस जाती है ।।

नभचर,थलचर,जलचर ।

सबकों खुब तपाती है

ठंडी चीजे, ठंडी जगाहे ।

सबकों अच्छी लगती है ।।

वृक्ष काटा, गर्मी बाटा ।

प्रकृति हमे बाताती है ।।

----+++---

" चींटी "

चींटी हर दम मेहनत करती।

अपनी धून में चलती रहती।।

क्रम से जाती क्रम से आती ।

अनुशासन का पाठ पढ़ाती।।

राहें अपनी खुद वों गढ़ती।

लक्ष्य मार्ग पर आगे बढ़ती।।

गिरकर उठती, उठकर संभलती।

बाधाओं से कभी ना डरती।।

रगों में अपनी साहस भरती।

कठिनाइयों से डटकर लड़ती।।

हार कर भी कोशिश करती।

लक्ष्य अपना तय करती।।

----+++----

“ नदियां ”

नदियां गाती सुन्दर गाना !

क्यों ना हम उनसे ये सीखें !!

कल-कल करती गीत सुनाती !

दिन-रात हर दम वो गाती !!

जात-पात का धर्म मिटाकर !

सब जीवों कि प्यास बुझाती !!

बून्द-बून्द बारिश का लेकर !

नदियां से सागर बन जाती !!

कभी ना रुकती,कभी ना झुकती !

चट्टानों से हर दम लड़ती !

अपनी राहे खुद वो गढ़ती !!

-----+++-----

“दर्पण ”

सब कोई मुझको ही देखे ।

बदले में खुद को ही देखे ।।

प्रतिबिंब मैं बनाता पूरा ।

मेरे बिन श्रृंगार है अधूरा ।।

गाड़ी के आगे मैं लगता ।

पीछे क है चित्र दिखाता ।।

मुझे देख जो गाड़ी चलाता ।

दुर्घटना से उसको बचाता ।।

हर किसी से सच कहती मैं ।

नहीं किसी से छल करती मैं ।। -

------+++-----

.

“ बचपन की यादे ”

यादें मेरे गांव के आने लगे हैं ,

मिट्टी मेरे गांव के बुलाने लगे है ।।

बचपन की यादें, बसी हैं मेरे गांव में,

खेले हैं खेल हम ,बरगद की छांव में।।

कागज की नाव को पानी में बहाना,

घर की छत से पतंग को उड़ाना ।।

पहली बारिश में जमकर नहाना,

नहर,तालाबों में डुबकियाँ लगाना ।।

----+++---

“ वृक्ष ”

अब वृक्ष हम लगायेंगे !

धरती को गुल से सजायेंगे !!

देकर पानी खाद उसे !

नित- नित उसे सिरजायेंगे !!

काट सके ना कोई उसे!

हम उसकी जान बचायेंगे !!

खाकर उसके फल -फूल हम !

स्वस्थ जीवन बितायेंगे !

बिन वृक्ष के नही है जीवन !

जग को यह बतलायेंगे !!

वृक्ष लगाओ ,वृक्ष बचाओ !

सबको हम सिखलायेंगे !!

----+++--

" मंजिल "

यूँ ही नही मिलती मंजिल,

चलना पढ़ता है.!!

कोशिशे बार-बार करना पढ़ता है।

सपने को साथ लिए,

जोश और जुनून लिए,

चलना पढ़ता है...!!

मेहनत दिन-रात कर,

लक्ष्य के मार्ग पर,

चलना पढ़ता है..!!

कांटो भरी राहों में ,

संघर्ष की मैदानों में,

चलना पढ़ता है...!!

---+++---

“ बचपन ”

ना जाने कब हम बड़े हो गए ।

पैरो पे अपने हम खड़े हो गए ।।

घुटनों के बल चलते थे हम।

उछल कूद करते थे हम।।

आंचल में हमें छिपाती थी माँ ।

दूध हमें पिलाती थी माँ ।।

गीत खुशी के गाती थी माँ ।

गाकर लोरी सुलाती थी माँ ।।

----+++---

प्रीतम कुमार साहू ‘‘कुशप्रीत’’

पत्नी - तोषणी साहू, **पुत्र -** कुशांक साहू

शिक्षा - एम.लिब, एम.ए अंग्रेजी, कोपा, बी.एड,

रुचि - चित्रकला, लेखन

व्यवसाय - सहायक शिक्षक

(शास.प्राथ.शाला कुरुद,भिलाई,जिला-दुर्ग)

मोबाइल - 9977880889

ब्लॉग - 9977880889blogspot.com